जनता के गीत

जनता के गीत

गार्गी प्रकाशन

तृतीय पुनर्मुद्रण : 2024
द्वितीय पुनर्मुद्रण : 2018
प्रथम पुनर्मुद्रण : 2012
द्वितीय संस्करण : 2005
प्रथम संस्करण : 1999

गार्गी प्रकाशन
1/4649/45बी, गली न0 -4,
न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : gargiprakashan15@gmail.com
website : gargibooks.com

मुद्रकः
प्रोग्रेसिव प्रिन्टर्स
ए-21 ए झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया
दिल्ली-110095

ISBN : 81-87772-17-4

मूल्य : 25 रुपये

"क्या अंधेरे दौर में भी गीत गाये जायेंगे? हाँ अंधेरे दौर के भी गीत गाये जायेंगे।"

सही कहना है महान जर्मन नाटककार बर्तोल्त ब्रेख्त का। यकीनन आज 'गीत गाये' जाने की कहीं अधिक जरूरत है- अतीत के संघर्षों के गीत, वर्तमान की जद्दोजहद के गीत और भविष्य की उम्मीदों के गीत भी। इसी उद्देश्य से छात्रों-नौजवानों और मेहनतकश जनता की क्रान्तिकारी भावनाओं, सपनों और आशाओं का इजहार करने वाले गीतों का यह संग्रह आपके हाथ में है।

इसमें से कई गीत राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के दौरान सामन्ती उपनिवेशी बेड़ियों के खिलाफ जुझारू जन संघर्षों के ताप तेवर लिए हुए हैं और कई गीत स्वतंत्रता के बाद जनाक्रोश और जनान्दोलन से जन्मे हैं। 'मेरा रंग दे बसंती चोला' और 'उरूजे कामयाबी पर' जैसे गीत अमर शहीद भगतसिंह के सहयात्रियों द्वारा रचे और गाये जाने वाले गीत हैं। 'मिल के चलो', 'जागा सारा संसार' और 'तोड़ो बन्धन तोड़ो' आदि गीत जन नाट्य संघ (इप्टा) के कलाकारों की रचनायें हैं। अन्य गीतों की रचना विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों से जुड़े जनपक्षधर संस्कृतिकर्मियों ने की है। इसमें कुछ भोजपुरी, ब्रज भाषा, अवधी, हरियाणवी और कुमाऊंनी जनगीत भी शामिल हैं, जिनमें लोक-जीवन की सुगन्ध और जन-चेतना की आंच है। इन गीतों का मूल स्वर है:

निराशा नहीं, आशा!
सूर्यास्त नहीं, सूर्योदय!
मृत्यु नहीं, जीवन!
समर्पण नहीं, संघर्ष!

इन गीतों में शोषण-उत्पीड़न की बुनियाद पर टिकी जन-विरोधी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का आह्वान और नये समाज की रचना का स्वप्न तीखेपन के साथ अभिव्यक्त हुआ है। मुमकिन है कि कुछ गीतों में जीवन के विविध रंग-रूप-रस-गंध की कमी महसूस हो फिर भी ये गीत लम्बे अरसे से गाये जाते रहे हैं और आज भी गाये जा रहे हैं। हमारे समय के जन-संस्कृतिकर्मियों के सामने यह एक बड़ी चुनौती है कि वे जीवन की नयी-नयी सच्चाइयों को, जनता की जिजीविषा, आशा-आकांक्षा और संघर्ष-चेतना को गीतों में ढालें तथा जनगीतों को कलात्मक ऊँचाई प्रदान करें। यह संग्रह छात्रों-नौजवानों को इस उम्मीद के साथ समर्पित है कि ये गीत उनके जीवन, संघर्ष और सृजन के अभियान में उत्साह और उमंग का संचार करेंगे।

गार्गी प्रकाशन

अनुक्रम

मेरा रंग दे बसंती चोला

मेरा रंग दे बसंती चोला
ओ मेरा रंग दे बसंती चोला माए
रंग दे बसंती चोला

दम निकले इस देश की खातिर बस इतना अरमान है
एक बार इस राह पे मरना सौ जन्मों के समान है

देख के वीरों की कुर्बानी
अपना दिल भी बोला
मेरा रंग दे बसंती चोला ...

जिस चोले को पहन शिवाजी खेले अपनी जान पे
जिसे पहन झांसी की रानी मिट गयी अपनी आन पे

आज उसी को पहन के निकला
हम मस्तों का टोला
मेरा रंग दे बसंती चोला...

बड़ा ही गहरा दाग है यारो जिसका गुलामी नाम है
उसका जीना भी क्या जीना जिसका देश गुलाम है

सीने में जो दिल था यारो
आज बना वो शोला
मेरा रंग दे बसंती चोला माए
रंग दे बसंती चोला ...

ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम

जलते भी गए कहते भी गए आज़ादी के परवाने
जीना तो उसी का जीना है जो मरना वतन पे जाने

ऐ वतन, ऐ वतन, हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जां तक लुटा जायेंगे
फूल क्या चीज है, तेरे कदमों में हम
भेंट अपने सरों की चढ़ा जायेंगे

कोई पंजाब से कोई महाराष्ट्र से
कोई यू.पी. से है कोई बंगाल से

तेरी पूजा की थाली में लाये हैं हम
फूल हर रंग के आज हर डाल से

नाम कुछ भी सही पर लगन एक है
जोत से जोत दिल की जला जायेंगे
ऐ वतन ऐ वतन...,

तेरी जानिब उठी जो कहर की नजर
उस नजर को झुकाकर ही दम लेंगे हम
तेरी धरती पर है जो क़दम ग़ैर का
उस क़दम का निशां तक मिटा देंगे हम

जो भी दीवार आयेगी अब सामने
ठोकरों से उसे हम गिरा जायेंगे
ऐ वतन ऐ वतन... ,

तू न रोना कि तू है भगत सिंह की माँ
मर के भी लाल तेरा मरेगा नहीं
घोड़ी चढ़ के तो लाते हैं दुल्हन सभी
हँस के हर कोई फाँसी चढ़ेगा नहीं

इश्क़ आज़ादी से आशिक़ों ने किया
देख लेना उसे हम ब्याह लायेंगे
ऐ वतन ऐ वतन... ,

जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देश वालों तुम आँसू बहाना नहीं
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं

लौट कर आ सके ना जहां में तो क्या
याद बन कर दिलों में समा जायेंगे
ऐ वतन, ऐ वतन....

❑ **प्रेम धवन**

सरफ़रोशी की तमन्ना

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए-क़ातिल में है।

ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है।

आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार-बार
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है।

वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमाँ
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।

रहबर-राहे मुहब्बत रह न जाना राह में
लज़्ज़ते-सहराने-वर्दी दूरिए मंज़िल में है।

खींच कर लाई है हमको क़त्ल होने की उम्मीद
आशिक़ों का आज जमघट कूचा-ए-क़ातिल में है।

अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले बिस्मिल में है।

❑ रामप्रसाद बिस्मिल

उरूजे-कामयाबी पर

उरूजे-कामयाबी पर कभी हिंदोस्ताँ होगा
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशियाँ होगा।

चखाएंगे मज़ा बरबादी-ए-गुलशन के गुलचीं को,
बहार आ जायेगी उस दिन जब हम अपना बाग़वाँ होगा।

जुदा मत हो मेरे पहलू से ए दर्दे-वतन हरगिज़,
न जाने बाद मुरदन मैं कहाँ, और तू कहाँ होगा।

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहाँ होगा।

ये आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खंज़रे-क़ातिल,
बता कब फैसला उनके हमारे दरमियाँ होगा।

शहीदों के मज़ारों पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशाँ होगा।

कभी वो दिन भी आयेगा जब अपना राज देखेंगे,
जब अपनी ही ज़मीं होगी, जब अपना आसमाँ होगा।

❑ रामप्रसाद बिस्मिल

दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर
हम को भी पाला था माँ-बाप ने दुख सह-सहकर
वक़्ते रुख़सत उन्हें इतना भी न आए कहकर
गोद में आँसू जो टपके कभी रुख़ से बहकर
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को।

नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके
याद कर लेना कभी हमको भी भूले-भटके
आपके अज़वे-बदन होवें जुदा कट-कट के
और सर चाक हो माता का कलेजा फटके
पर न माथे पे शिकन आए क़सम खाने को।

अपनी क़िस्मत में अज़ल से ही सितम रक्खा था
रंज रक्खा था, महन रक्खा था, ग़म रक्खा था
किस को परवाह थी और किस में यह दम रक्खा था
हमने जब वादिए-ग़ुर्बत में क़दम रक्खा था
दूर तक यादे-वतन आई थी समझाने को।

अपना कुछ ग़म ही नहीं पर ये ख़्याल आता है
मादरे-हिन्द पे कब तक ये ज़वाल आता है
देश आज़ादी का कब हिन्द में साल आता है
क़ौम अपनी पे तो रह-रह के मलाल आता है
मुन्तज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को

❑ **रामप्रसाद बिस्मिल**

तोड़ो बन्धन तोड़ो

तोड़ो बन्धन तोड़ो
ये अन्याय के बंधन
तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन, तोड़ो

हम क्या जाने भारत में भी आया है स्वराज
ओ भइया आया है स्वराज
आज भी हम भूखे-नंगे हैं आज भी हम मोहताज
ओ भइया आज भी हम मोहताज

रोटी माँगें तो खायें हम लाठी-गोली आज
थैलीशाहों की ठोकर में सारे देश की लाज

ऐ मज़दूर और किसानो – ऐ दुखियारे इंसानो
ऐ छात्रो और जवानो – ऐ दुखियारे इंसानो
झूठी आशा छोड़ो – तोड़ो बन्धन तोड़ो......

सौ-सौ वादे करके हमसे लिए जिन्होंने वोट
ओ भइया लिए जिन्होंने वोट
देश बचाओ कहकर हमको देते हैं ये चोट
ओ भइया देते हैं ये चोट

नौकरी माँगें नारे मिलते कैसा झूठा राज
शोषण के जूतों से पिसकर रोता भारत आज

ऐ मज़दूर और किसानो – ऐ दुखियारे इंसानो
ऐ छात्रो और जवानो – ऐ दुखियारे इंसानो
झूठी आशा छोड़ो – तोड़ो बन्धन तोड़ो .....

❑ इप्टा

आ रे नौजवान

आ रे नौजवान – 2
आ रे नौजवान तेरी बेड़ियाँ रही हैं टूट
क्रान्ति का नया कदम बढ़ा –2

बढ़ रहा है आज तेरा कारवाँ
सर झुका रहा जमीं को आसमाँ
राह की सफों को तूने कर लिया है पार
सामने की मंज़िलें रही तुझे पुकार

उठ ग़ुलाम ऽऽऽऽऽ उठ ग़ुलाम
उठ ग़ुलाम जिन्दगी के बंधनों को तोड़ दे
चल सुबह की रोशनी में डगमगाना छोड़ दे।
आ रे नौजवान .....

अब सुना न जुल्म की कहानियाँ
दांव पर लगा दे नौजवानियाँ
ख़त्म हो चली हैं ऐशो–हुक्मरानियाँ
ख़त्म हो चली हैं ये वीरानियाँ

उठ ग़ुलाम ऽऽऽऽऽ उठ ग़ुलाम
उठ ग़ुलाम जिन्दगी के बन्धनों को तोड़ दे
चल सुबह की रोशनी में डगमगाना छोड़ दे।
आ रे नौजवान .....

❑ इप्टा

जागा सारा संसार

जागा रे जागा रे जागा सारा संसार
फूटी किरण लाल है खुलता है पूरब का द्वार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

अंगड़ाई लेती ये धरती उठी है
सदियों की ठुकराई मिट्टी उठी है
टूटे हो टूटे ग़ुलामी के बन्धन हज़ार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

आया ज़माना हो अपना ज़माना
क़िस्मत का ये रोना-गाना पुराना
बदलेंगे हम अपने जीवन की नदिया की धार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

हर भूखा कहता है यूँ ना मरूँगा
मैं जाके मालिक को नंगा करूँगा
ढा दूंगा दुखियारी लाशों पे उट्ठी दीवार
जागा रे जागा रे जागा सारा संसार

❑ इप्टा

हम मेहनत करने वाले

हम मेहनत करने वाले, सब एक हैं, एक हैं।
हम ज़ुल्म के लड़ने वाले, सब एक हैं, एक हैं।

हम कोरिया में, हम हैं हिन्दुस्तान में,
हम रूस में हैं, चीन में, जापान में,
हम अफ्रीका में, हम हैं इंग्लिस्तान में,
हम हैं दुनिया के हर सच्चे इंसान में,

हम क्या गोरे क्या काले, सब एक हैं, एक हैं।
हम मेहनत करने वाले ...

इन बस्तियों को जगमगाना है सदा,
इन खेतियों को लहलहाना है सदा,
उठाओ हाथ छोड़ो डर मौत का,
कि ज़िन्दगी के गीत गाना है सदा,
हम मौत पे हँसने वाले, सब एक हैं, एक हैं।
हम मेहनत करने वाले...

हम बच्चों की मुस्कान बेचते नहीं,
हम माँओं के अरमान बेचते नहीं,
हम लूट के इस दौलत के बाज़ार में,
हम इंसानों की जान बेचते नहीं,
आज़ादी के मतवाले, सब एक हैं, एक हैं।
हम मेहनत करने वाले...

हम अजन्ता और ताज के फ़नकार हैं,
हम पेरिस के और रोम के श्रृंगार हैं,
हम हँसते-गाते कारख़ानों के गीत हैं,
हम चलती-फिरती सड़कों की रफ़्तार हैं,
हम जीवन के उजियारे, सब एक हैं, एक हैं।
हम मेहनत करने वाले...

❑ इप्टा

मिल के चलो

मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो!
चलो भई, मिल के चलो, मिल के चलो, मिल के चलो!
ये वक़्त की आवाज़ है, मिल के चलो

ये ज़िन्दगी का राज है, मिल के चलो
मिल के चलो ....

आज दिल की रंजिशें मिटा के आ,
आज भेदभाव सब मिटा के आ,
आज़ादी से है प्यार, जिन्हें देश से है प्रेम,
क़दम क़दम से और दिल से दिल मिला के आ।
मिल के चलो...

यह भूख क्यों, ये जुल्म का है ज़ोर क्यों?
ज़ोर क्यों, ज़ोर क्यों?
यह जंग-जंग-जंग का है शोर क्यों?
शोर क्यों, शोर क्यों?
हर एक नज़र बुझी-बुझी हर एक दिल उदास
बहुत फ़रेब खाये, अब फरेब और क्यों?
मिल के चलो ....

जैसे सुर से सुर मिले हों राग के,
राग के राग के
जैसे शोले मिल के बढ़ें आग के,
आग के आग के
जिस तरह चिराग़ से जले चिराग़,
ऐसे चलो भेद तेरा मेरा त्याग के,
मिल के चलो....

❑ प्रेम धवन

हो सावधान आया तूफान

हो सावधान आया तूफ़ान
पर दूर नहीं है किनारा

हम ही मुसाफ़िर हम ही खिवैया
हम सब हिम्मत वाले
निकल पड़े मौजों से खेलने
देशभक्त मतवाले
वीर बढ़ चलो धीर धर चलो
चीर चपल जलधारा

है भय कोई? कोई भय नहीं
है डर कोई? कोई डर नहीं
फिर दूर नहीं है किनारा-3
अजगर बन के गरज रहा है
सागर बाधाओं का
एक हैं हम तो चमक रहा है
तारा आशाओं का
वीर बढ़ चलो, धीर धर चलो...

साम्राज्य के छल से लड़ो
आज़ादी की ख़ातिर
खूनी चंचल दल से लड़ो
आज़ादी की ख़ातिर
वीर बढ़ चलो धीर धर चलो
चीर चपल जलधारा

❑ इप्टा

इस बार लड़ाई लाने वाला

इस बार लड़ाई लाने वाला, बच के न जाने पाएगा
तू धन दौलत का लोभी डाकू, पिसने वालों की दुनिया में
गर आग लगाने आएगा, इस आग में ख़ुद जल जाएगा

तुम एटम बम, डॉलर के व्यापारी, मददगार ग़द्दारों के
है लूट तुम्हारा धर्म, पुजारी तुम खूनी तलवारों के
हमको डर किसका, भूत तुम्हारा तुमको ही खा जाएगा
इस बार लड़ाई ...

हम माथे का सिंदूर, गरजता गाढ़ा ख़ून न बेचेंगे
नन्हें बच्चों की हंसी न बेचेंगे, हम ख़ुशी न बेचेंगे
नर-नारी का व्यापारी, मौत के हाथों ख़ुद बिक जाएगा
इस बार लड़ाई ...

तुम फ़ौज लिए जिन सड़कों से गुज़रोगे, हम टक्कर लेंगे
आकाश में शोले बन के उड़ेंगे, हम सागर खौला देंगे
जो चाल चलेगा हिटलर की, हिटलर की तरह मिट जाएगा
इस बार लड़ाई ...

क्रान्ति के लिए उठे कदम

क्रान्ति के लिए उठे कदम
क्रान्ति के लिए जली मशाल

भूख के विरुद्ध भात के लिए
रात के विरुद्ध प्रात के लिए
मेहनती ग़रीब जात के लिए
हम लड़ेंगे हमने ली क़सम-3
क्रान्ति के लिए ...

छिन रही हैं आदमी की रोटियाँ
बिक रही हैं आदमी की बोटियाँ
किन्तु सेठ भर रहे हैं कोठियाँ
लूट का ये राज हो खतम-3
क्रान्ति के लिए ...

गोलियों की गन्ध में घुटी हवा
हिंद जेल आग में तपा तवा
खद्दरी सफ़ेद कोढ़ की दवा
ख़ून का स्वराज हो खतम-3
क्रान्ति के लिए ...

जंग चाहते हैं आज जंगखोर
ताकि राज कर सकें हरामखोर
पर जवान हैं, जहान है कठोर
डालरों का जोर हो खतम-3
क्रान्ति के लिए ...

❑ **शंकर शैलेन्द्र**

तू ज़िन्दा है...

तू ज़िन्दा है तू ज़िन्दगी की जीत में यक़ीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

ये ग़म के और चार दिन, सितम के और चार दिन
ये दिन भी जायेंगे गुजर, गुज़र गये हज़ार दिन
कभी तो होगी इस चमन पे भी बहार की नज़र
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

सुबह-ओ-शाम के रंगे हुए गगन को चूमकर
तू सुन ज़मीन गा रही है, कब से झूम-झूम कर
तू आ मेरा सिंगार कर, तू आ मुझे हसीन कर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

हज़ार भेस धर के आयी मौत तेरे द्वार पर
मगर तुझे न छल सकी चली गयी वो हार कर
हर-इक सुबह के संग सदा, तुझे मिली नई उमर

अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।
हमारे कारवाँ को मंजिलों का इंतिज़ार है
ये आँधियों, ये बिजलियों की पीठ पर सवार है
तू आ क़दम मिला के चल, चलेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

ज़मीं के पेट में पली अगन, पले हैं जलजले
टिके ना टिक सकेंगे भूख, रोग के स्वराज ये
मुसीबतों के सर कुचल, बढ़ेंगे एक साथ हम
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

बुरी है आग पेट की, बुरे हैं दिल के दाग ये
न छुप सकेंगे अब कभी बनेंगे इन्क़लाब ये
गिरेंगे जुल्म के महल, बनेंगे फिर नवीन घर
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला ज़मीन पर।

❑ शंकर शैलेन्द्र

ये बात ज़माना याद रखे

हमको मिटा सके ये ज़माने में दम नहीं
हमसे ज़माना खुद है ज़माने से हम नहीं
ये बात ज़माना याद रखे, मज़दूर हैं हम मज़बूर नहीं।
ये भूख गरीबी बदहाली हरगिज़ हमको मंज़ूर नहीं।

चलते हैं मशीनों के चक्के, इन चौड़े पुट्ठों के बल से
मेहनत से कमाई दौलत को, पूंजी ले जाती है छल से
ये बात हमें मालूम मगर ये बात हमें मंज़ूर नहीं।

सरमाए का जादू टूट गया, मेहनत की हिना रंग लाने लगी
उम्मीद की डाली फलने लगी, अरमानों की खुशबू आने लगी
सदियों का अंधेरा टूट गया, आकाश पे लाली छाने लगी

सुबहों के हम दीवाने हैं, ये रात हमें मंज़ूर नहीं।

ये जंग है जंगे आज़ादी, मज़दूर है आज सिपाही भी
हाथों में चमकते हैं झंडे, लो आज हुए हमराही भी
रखते हैं जान हथेली पर, झुकना अपना दस्तूर नहीं।

ज़ुल्मों का शिकंजा तोड़ के हम हक छीन के अपना मानेंगे
मंजिल के लिए है गर ये सफर मंज़िल पे पहुंच के मानेंगे
पैरों से ये मंज़िल दूर सही आंखों से यह मंज़िल दूर नहीं।

❑ शंकर शैलेन्द्र

देश हमारा धरती अपनी

देश हमारा, धरती अपनी, हम धरती के लाल
नया संसार बनायेंगे, नया इन्सान बनायेंगे।

सौ-सौ स्वर्ग उतर आयेंगे, सूरज सोना बरसायेंगे
दूध पूत के लिए पहनकर, जीवन की जयमाल
रोज त्योहार मनायेंगे, नया संसार बसायेंगे।

सुख सपनों के सुर गूंजेंगे, मानव की मेहनत पूजेंगे
नयी चेतना नये विचारों की हम लिए मशाल
जगत को राह दिखायेंगे, नया संसार बनायेंगे।

एक करेंगे हम जनता को, सींचेंगे जग की ममता को
नयी सभ्यता समता रचकर, करके उन्नत भाल
मनुज को मुक्ति दिलायेंगे, नया संसार बनायेंगे।

❑ शील

जागा नया इंसान ज़माना बदलेगा

जागा नया इंसान ज़माना बदलेगा, बदलेगा
उठा है जो तूफ़ान, वो इस दुनिया को बदल कर दम लेगा

आयेंगी मुश्किलें हज़ारों, पर हम भी लाचार नहीं
दो कौड़ी के मोल आज हम बिकने को तैयार नहीं
इस जीवन का इतिहास आज से, एक नयी करवट लेगा
जागा नया इंसान ज़माना बदलेगा, बदलेगा

एका सबसे पहले यारों समय की है पुकार यही
एका हर बल से जीतेगा ढाल यही तलवार यही
हम एक अगर हो जायें तो एका सारे करतब कर लेगा
जागा नया इन्सान ज़माना बदलेगा, बदलेगा

❑ शील

नज़्म

उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ!
जो शानों पर बग़ावत का अलम लेकर निकलते हैं
किसी ज़ालिम हुकूमत के धड़कते दिल पे चलते हैं
मैं उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ!

जो रख देते हैं सीना गर्म तोपों के दहानों पर
नज़र से जिनकी बिजली कौंधती है आसमानों पर
मैं उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ!

जो आज़ादी की देवी को लहू की भेंट देते हैं
सदाक़त के लिए जो हाथ में तलवार लेते हैं
मैं उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ!

जो पर्दे चाक करते हैं हुकूमत के, सियासत के
जो दुश्मन हैं क़दामत के, जो हामी हैं बग़ावत के
मैं उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ!

कुचल सकते हैं जो मज़दूर ज़र के आस्तानों को
जो जलकर आग दे देते हैं, जंगी कारख़ानों को
मैं उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ!

झुलस सकते हैं जो शोलों से कुफ़्रो-दीं की बस्ती को
जो लानत जानते हैं मुल्क में फ़िरक़ा-परस्ती को
मैं उनके गीत गाता हूँ, मैं उनके गीत गाता हूँ।

वतन के नौजवानों में नये जज़्बे जगाऊँगा
मैं उनके गीत गाऊंगा, मैं उनके गीत गाऊंगा।
मैं उनके गीत गाऊंगा, मैं उनके गीत गाऊंगा!

❑ **साहिर लुधियानवी**

वो सुब्ह हमीं से आयेगी

इन काली सदियों के सर से जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नग़में गायेगी।
वो सुबह कभी तो आयेगी।

जिस सुबह की खातिर जुग जुग से हम सब मर-मर कर जीते हैं
जिस सुबह के अमृत की धुन में हम ज़हर के प्याले पीते हैं,
इन भूखी-प्यासी रूहों पर इक दिन तो करम फ़रमायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी।

माना कि अभी तेरे-मेरे अरमानों की क़ीमत कुछ भी नहीं
मिट्टी का भी है कुछ मोल मगर इन्सान की क़ीमत कुछ भी नहीं
इन्सानों की इज्जत जब झूठे सिक्कों में न तौली जायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी।

दौलत के लिए जब औरत की अस्मत को न बेचा जायेगा
चाहत को न कुचला जायेगा, ग़ैरत को न बेचा जायेगा
अपनी काली करतूतों पर जब ये दुनिया शरमायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी।

बीतेंगे कभी तो दिन आखिर, ये भूख के और बेकारी के
टूटेंगे कभी तो बुत आखिर, दौलत की इजारेदारी के
जब एक अनोखी दुनिया की बुनियाद उठायी जायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी।

मज़बूर बुढ़ापा जब सूनी राहों की धूल न फांकेगा
मासूम लड़कपन जब गन्दी गलियों में भीख न माँगेगा
हक़ माँगने वालों को जिस दिन सूली न दिखाई जायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी।

फ़ाक़ों की चिताओं पर जिस दिन इंसाँ न जलाये जायेंगे
सीनों के दहकते दोज़ख़ में अरमाँ न जलाये जायेंगे
ये नरक से भी गन्दी दुनिया, जब स्वर्ग बनायी जायेगी
वो सुबह कभी तो आयेगी।

जब धरती करवट बदलेगी, जब क़ैद से क़ैदी छूटेंगे
जब पाप-घरौंदे फूटेंगे, जब जुल्म के बन्धन टूटेंगे
उस सुबह को हम ही लायेंगे, वो सुबह हमीं से आयेगी!
वो सुबह हमीं से आयेगी।

मनहूस समाजी ढांचों में, जब जुर्म न पाले जायेंगे
जब हाथ न काटे जायेंगे, जब सर न उछाले जायेंगे
जेलों के बिना जब दुनिया की सरकार चलायी जायेगी
वो सुबह हमीं से आयेगी।

संसार के सारे मेहनतकश खेतों से, मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इंसाँ, तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अम्न और खुशहाली के फूलों से सजायी जायेगी।
वो सुबह हमीं से आयेगी।

❑ **साहिर लुधियानवी**

ग़ज़ल

भड़का रहे हैं आग लबे-नग़्मा-गर से हम,
ख़ामोश क्यों रहेंगे ज़माने के डर से हम?

कुछ और बढ़ गये जो अंधेरे तो क्या हुआ,
मायूस तो नहीं हैं तलू-ए-सहर से हम!

ले दे के अपने पास फ़क़त इक नज़र तो है
देखें क्यों ज़िंदगी को किसी की नज़र से हम!

माना कि इस ज़मीं को न गुलजार कर सके
कुछ ख़ार कम तो कर गये, गुज़रे जिधर से हम।

❑ साहिर लुधियानवी

आवाज़े आदम

दबेगी कब तलक आवाज़े-आदम हम भी देखेंगे
रुकेंगे कब तलक जज़्बाते-बरहम हम भी देखेंगे
चलो यूँ ही सही ये जौरे-पैहम हम भी देखेंगे

दरे-ज़िन्दाँ से देखें या उरुजे-दार से देखें
तुम्हें रुसवा सरे-बाज़ारे-आलम हम भी देखेंगे
ज़रा दम लो मआले-शौकते-जम हम भी देखेंगे

ब-ज़ोमे-क़ुव्वते-फ़ौलादो-आहन देख लो तुम भी
ब-फ़ैज़े-जज़्बा-ए-ईमाने-मोहकम हम भी देखेंगे
जबीने-कज-कुलाही ख़ाक पर ख़म हम भी देखेंगे

मुकाफ़ाते-अमल, तारीख़-ए-इंसा की रिवायत है
करोगे कब तलक नावक फ़राहम हम भी देखेंगे
कहाँ तक है तुम्हारे ज़ुल्म में दम हम भी देखेंगे

ये हंगामे-विदा-ए-शब है, ऐ जुलमत के फ़रज़न्दो
सहर के दोश पर गुलनार परचम हम भी देखेंगे
तुम्हें भी देखना होगा ये आलम हम भी देखेंगे

❑ साहिर लुधियानवी

ये किसका लहू है कौन मरा

ऐ रहबरे मुल्को क़ौम बता
आंखें तो उठा नज़रें तो मिला
कुछ हम भी सुनें हम को भी बता
ये किसका लहू है कौन मरा!

धरती की सुलगती छाती पर
बेचैन शरारे पूछते हैं
हम लोग जिन्हें अपना न सके
वो ख़ून के धारे पूछते हैं
सड़कों की ज़बाँ चिल्लाती है
सागर के किनारे पूछते हैं।
ये किसका...

ऐ अज़मे फ़ना देने वालो
पैग़ामे वफ़ा देने वालो
अब आग से क्यूँ कतराते हो
मौजों को हवा देने वालो
तूफ़ान से अब क्यूँ डरते हो
शोलों को हवा देने वालो
क्या भूल गए अपना नारा?
ये किसका...

हम ठान चुके हैं अब जी में
हर ज़ालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो
हम आगे बढ़ते जाएंगे
हम मंज़िले-आज़ादी की क़सम
हर मंज़िल पे दोहरायेंगे।
ये किसका...

❑ साहिर लुधियानवी
(नौसेना विद्रोह, 1946, के समय लिखी नज़्म)

ये जंग है जंगे आज़ादी

ये जंग है जंगे-आज़ादी आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की, महकूमों की मज़बूरों की
आज़ादी के मतवालों की,
दहकानों की मज़दूरों की

ये जंग है...
सारा संसार हमारा है
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन
हम अफरंगी हम अफरीकी
हम चीनी हैं जांबाज़े-वतन
हम सुर्ख सिपाही ज़ुल्म शिकन
आहन पैकर, फ़ौलाद-बदन
ये जंग है...

वो जंग ही क्या वो अमन ही क्या,
दुश्मन जिसमें नाराज़ न हो
वो दुनिया दुनिया क्या होगी,
जिस दुनिया में स्वराज न हो

वो आज़ादी-आज़ादी क्या,
मज़दूर का जिसमें राज न हो
ये जंग है...

लो सुर्ख़ सबेरा आता है,
आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार तराना गाता है,
आज़ादी का आज़ादी का
देखो परचम लहराता है,
आज़ादी का आज़ादी का
ये जंग है ...

ये जंग है जंगे-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले
हम हिन्द के रहने वालों की,
महकूमों की मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की,
दहकानों की मज़दूरों की
ये जंग है ...

❑ मखदूम मोहिउद्दीन

बोल, अरी ओ धरती बोल

बोल अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डावांडोल

बादल बिजली रैन अंधियारी, दुख की मारी परजा सारी
बूढ़े बच्चे सब दुखिया हैं, दुखिया नर हैं दुखिया नारी
बस्ती-बस्ती लूट मची है, सब बनिये हैं सब व्योपारी

बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डावांडोल -

कलजुग में जग के रखवाले, चांदी वाले, सोने वाले
देसी हों या परदेसी हों, नीले, पीले, गोरे, काले
मक्खी भुनगे भिन-भिन करते, ढूंढे हैं मकड़ी के जाले

बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डावांडोल

क्या अफरंगी, क्या तातारी, आंख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी, कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सरमाए के धंधे, कब तक ये सरमायादारी

बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डावांडोल

नामी और मशहूर नहीं हम, लेकिन क्या मज़दूर नहीं हम
धोखा और मज़दूरों को दें, ऐसे तो मज़बूर नहीं हम
मंज़िल अपने पांव के नीचे, मंज़िल से अब दूर नहीं हम

बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डावांडोल

बोल कि तेरी ख़िदमत की है, बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाये हैं, बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र उठाया, बोल कि हमसे हश्र उठा है
बोल की हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती

बोल, अरी ओ धरती बोल
राज सिंहासन डावांडोल

❑ **मजाज़ लखनवी**

आज़ादी कैसी? किसकी?

कौन आज़ाद हुआ
किसके माथे से ग़ुलामी की सियाही छूटी
मेरे सीने में अभी दर्द है महकूमी का
मादरे हिन्द के चेहरे पे उदासी है वही
कौन आज़ाद हुआ...
ख़ंजर आज़ाद है सीने में उतरने के लिए
मौत आज़ाद है लाशों पे गुज़रने के लिए
कौन आज़ाद हुआ...

काले बाज़ार में बदशक्ल चुड़ैलों की तरह
क़ीमतें काली दुकानों पे खड़ी रहती हैं
हर ख़रीदार की जेबों को कतरने के लिए
कौन आज़ाद हुआ...

कारख़ानों में लगा रहता है
सांस लेती हुई लाशों का हुजूम
बीच में उनके फिरा करती है बेकारी भी
अपने खूंखार दहन खोले हुए
कौन आज़ाद हुआ...

रोटियाँ चकलों की कहवाएं हैं
जिनको सरमाए के दल्लालों ने
नफाखोरी के झरोखों में सजा रक्खा है
बालियाँ धान की गेहूं के सुनहरे खोशे
मिस्र-ओ-यूनान के मज़बूर ग़ुलामों की तरह
अजनबी देश के बाज़ारों में बिक जाते हैं
और बदबख्त किसानों की तड़पती हुई रूह
अपने अफलास में मुंह ढांप के सो जाती है
कौन आज़ाद हुआ...

❑ अली सरदार जाफ़री

तराना

दरबारे-वतन में जब एक दिन सब जाने वाले जायेंगे
कुछ अपनी सज़ा को पहुंचेंगे, कुछ अपनी जज़ा ले जायेंगे!
ऐ ज़ुल्म के मातो, लब खोलो, चुप रहने वालो चुप कब तक
कुछ हश्र तो इनसे उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले जायेंगे!

ऐ ख़ाकनशीनो, उठ बैठो, वह वक़्त करीब आ पहुँचा है
जब तख़्त गिराये जायेंगे, जब ताज उछाले जायेंगे!
अब टूट गिरेंगी ज़ंजीरें, जब ज़िदानों की ख़ैर नहीं,
जो दरिया झूम के उट्ठे हैं, तिनकों से न टाले जायेंगे।

कटते भी चलो, बढ़ते भी चलो, बाजू भी बहुत हैं सर भी बहुत
चलते ही चलो, कि अब डेरे मंज़िल पे ही डाले जायेंगे।

❑ **फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'**

अभी वही है निज़ामे-कोहना

अभी वही है निज़ामे-कोहना अभी तो ज़ुल्मो-सितम वही है
अभी मैं किस तरह मुस्कराऊं अभी तो रंजो-अलम वही है
नये गुलामो अभी तो हाथों में हैं वही कास-ए-गदाई
अभी तो ग़ैरों का आसरा है अभी तो रस्मो-करम वही है
अभी कहाँ खुल सका है पर्दा अभी कहाँ तुम हुए हो उरियां
अभी तो रहबर बने हुए हो अभी तुम्हारा भरम वही है
अभी तो जम्हूरियत के साये में आमरीयत पनप रही है
हवस के हाथों में अब भी क़ानून का पुराना क़लम वही है
अभी वही हैं उदास राहें वही हैं तरसी हुई निगाहें
शहर के पैगम्बरों से कह दो यहाँ अभी शामे-ग़म वही है।
मैं कैसे मानूं कि इन ख़ुदाओं की बन्दगी का तिलिस्म टूटा
अभी वही पीरे-मैक़दा है अभी तो शेखो-हरम वही है

❑ **खलीलुर्रहमान आज़मी**

गर थाली आपकी खाली है...

गर थाली आप की ख़ाली है
तो सोचना होगा कि खाना कैसे खाओगे

ये आप पर है कि पलट दो सरकार को उलटा
जब तक कि खाली पेट नहीं भरता

अपनी मदद
आप करो
किसी का इंतजार ना करो

यदि काम नहीं है और आप हो ग़रीब
तो खाना कैसे होगा ये आप पर है
सरकार आपकी हो ये आप पर है

पलट दो उलटा सर नीचे और टांगे ऊपर
आप पर है कि पलट दो सरकार को उलटा

तुम पर हंसते हैं कहते हैं तुम ग़रीब हो
वक़्त मत गंवाओ अपने आप को बढ़ाओ

योजना को अमली जामा पहनाने के लिए
ग़रीब-ग़ुरबा को अपने पास लाओ

ध्यान रहे कि काम होता रहे
होता रहे-होता रहे

जल्दी ही समय आएगा जब वो बोलेंगे
कमजोर के आस-पास हंसी मंडरायेगी,
हंसी मंडरायेगी, हंसी मंडरायेगी

❑ बर्तोल्त ब्रेख्त

वो सब कुछ करने को तैयार...

वो सब कुछ करने को तैयार
सभी अफसर उनके
जेल और सुधार-घर उनके
सभी दफ्तर उनके
वो सब कुछ ...

कानूनी किताबें उनकी
कारख़ाने हथियारों के
पादरी प्रोफेसर उनके
जज और जेलर तक उनके
सभी अफसर उनके
वो सब कुछ ...

अख़बार, छापेखाने
हमें अपना बनाने के
बहाने चुप कराने के
नेता और गुण्डे तक उनके
सभी अफसर उनके
वो सब कुछ...

एक दिन ऐसा आयेगा
पैसा फिर काम न आएगा
धरा हथियार रह जाएगा
और ये जल्दी ही होगा
ये ढांचा बदल जाएगा

❑ बर्तोल्त ब्रेख्त

अपने लिए जिए तो क्या जिए

अपने लिए जिए तो क्या जिए
तू जी, ऐ दिल, ज़माने के लिए

हिम्मत बुलंद है अपनी पत्थर सी जान रखते हैं
क़दमों तले ज़मीं तो क्या हम आसमान रखते हैं
गिरते हुए को उठाने के लिए, तू जी, ए दिल....

बाज़ार से ज़माने के कुछ भी न हम ख़रीदेंगे
हां बेचकर खुशी अपनी औरों के ग़म ख़रीदेंगे
बुझते दिये, जलाने के लिए, तू जी, ऐ दिल ...

अपनी ख़ुदी को जो समझा, उसने ख़ुदा को पहचाना
आज़ाद फितरते-इंसाँ अंदाज़ क्यों ग़ुलामाना
सर ये नहीं है, झुकाने के लिए, तू जी, ऐ दिल...

नाकामियों से घबराकर तू क्यों उदास होता है
हम हमसफर बने तेरे तू क्यों उदास होता है
हँस तू सदा हँसाने के लिए
तू जी, ऐ दिल, जमाने के लिए

चल माहताब लेकर चल, चल आफ़ताब लेकर चल
तू अपनी एक ठोकर में सौ इंक़लाब लेकर चल
जुल्मो-सितम मिटाने के लिए, तू जी, ऐ दिल...

❑ 'बादल' फिल्म का एक गीत

हम चले, हम चले, हम चले

हम चले, हम चले, हम चले
ज्वार में आज तूफां तले।
पांव तक खुद चले आ रहे
एक दो क्या सभी मरहले।

अजगरों सी लहर उठ रही तो उठे,
पांव पर है भरोसा हमें।
है हरारत लहू और पसीना सभी-2
क्या नहीं है, यहां बांह में।
छूट जायें सहारे भले।
आसमाँ छू रहे हौसले। हम चले...

कश्तियाँ डगमगाती रहें तो रहें।
पर्वतों से अडिग हम रहें।
हो मगर या भँवर या कि मझधार हो
सौ क़यामत, कहर भी ढहे।
प्राण फौलाद में हैं ढले।
झूमते चल पड़े क़ाफ़िले। हम चले...

आफतों की घटाएं घिरें तो घिरें
सर उठाये सिपाही बढ़ें।
बिजलियों सी बलायें गिरें तो गिरें
दौड़कर विघ्न पर जा चढ़ें।
मंज़िलें हैं क़दम के तले।
खुद-ब-खुद घट चले फासले। हम चले...

❑ उमाकांत मालवीय

सृष्टि बीज का नाश न हो...

सृष्टि बीज का नाश न हो, हर मौसम की तैयारी है
कल का गीत लिए होठों पर, आज लड़ाई जारी है
आज लड़ाई जारी है

हर आंगन का बूढ़ा सूरज परचम-परचम दहक उठा
काल सिंधु का ज्वार परिश्रम के फूलों में महक उठा

ध्वंस और निर्माण जवानी की निश्छल किलकारी है
कल का गीत लिए होठों पर, आज लड़ाई जारी है
आज लड़ाई जारी है

धरती की निर्मल इच्छा का ताप गुलमुहर उधर खिला
परिवर्तन की अंगड़ाई का स्वप्न फसल को इधर मिला
नील गगन पर मृत्युहीन नवजीवन की गुलकारी है
कल का गीत लिए होठों पर, आज लड़ाई जारी है
आज लड़ाई जारी है

ज़ंजीरों से क्षुब्ध युगों के प्रणय गीत की रणभेरी
मुक्ति प्रिया की पगध्वनि लेकर घर घर लगा रही फेरी
हर नारे में महाकाव्य के सृजनकर्म की बारी है
कल का गीत लिए होठों पर, आज लड़ाई जारी है
आज लड़ाई जारी है

❑ महेश्वर

लड़ाई जारी है

जारी है–जारी है
अभी लड़ाई जारी है।

यह हो छापा तिलक लगाये और जनेऊधारी है
यह जो जात पांत पूजक है यह जो भ्रष्टाचारी है
यह जो भूपति कहलाता है जिसकी साहूकारी है
उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।

यह जो तिलक मांगता है, लड़के की धौंस जमाता है
कम दहेज पाकर लड़की का जीवन नरक बनाता है
पैसे के बल पर यह जो अनमोल ब्याह रचाता है
यह जो अन्यायी है सब कुछ ताकत से हथियाता है

उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।

यह जो काला धन फैला है, यह जो चोरबाजारी है
सत्ता पांव चूमती जिसके, यह जो सरमायेदारी है
यह जो यम-सा नेता है, मतदाता की लाचारी है
उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।

जारी है--जारी है
अभी लड़ाई जारी है।

❑ **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना**

चल अवाम के लश्कर चल

चल आंधी चल अंधड़ चल
चल तूफ़ान बवण्डर चल
चल ग़रीब के लश्कर चल
चल अवाम के लश्कर चल
नारों से ग़रीबी नहीं मिटेगी
चल अब इस पर करें अमल।

हर दिन नई-नई बातें, हर दिन नई-नई घातें
नई रोशनी लाने वाले, ले आये काली रातें
इस परिवर्तन के नये दौर में चलो मचा दें उथल-पुथल
चल अवाम के लश्कर चल, चल ग़रीब के लश्कर चल!

भटक रही दर-दर तरुणाई, आसमान छूती मंहगाई
जितने गड्ढे पाटे जाते उतनी गहरी होती खाई
लूट व शोषण के डेरे हैं, झपट रहे हैं टिड्डीदल
चल अवाम के लश्कर चल, चल ग़रीब के लश्कर चल!

छीन ले रोटी छीन ले काम, बिना लक्ष्य कैसा विश्राम
धन और धरती बंट के रहेगी, भेद की खाई पट के रहेगी

आस्तीन के सांपों के फन डालो रे इस बार कुचल
चल अवाम के लश्कर चल, चल ग़रीब के लश्कर चल!

बहुत सह लिया अब न सहेंगे, जो कहना है साफ कहेंगे
नये दौर में चल न सकेगा, बढ़ा कारवां रुक न सकेगा
ठोकर से राह बना डालें, डालें युग की तस्वीर बदल
चल अवाम के लश्कर चल, चल ग़रीब के लश्कर चल!

❑ मानसिंह राही

पढ़ना-लिखना सीखो

पढ़ना-लिखना सीखो ओ मेहनत करने वालो
पढ़ना-लिखना सीखो ओ भूख से मरने वालो

क ख ग घ को पहचानो
अलिफ़ को पढ़ना सीखो,
अ आ इ ई को हथियार
बनाकर लड़ना सीखो

ओ सड़क बनाने वालो, ओ भवन उठाने वालो
खुद अपना क़िस्मत का फैसला अगर तुम्हें करना है
ओ बोझा ढोने वालो, ओ रेल चलाने वालो
अगर देश की बागडोर को क़ब्ज़े में करना है

क ख ग घ को पहचानो
अलिफ़ को पढ़ना सीखो,
अ आ इ ई को हथियार
बनाकर लड़ना सीखो

पूछो मज़दूरी की खातिर लोग भटकते क्यों हैं?
पढ़ो, तुम्हारी सूखी रोटी गिद्ध लपकते क्यों हैं?
पूछो, माँ-बहनों पर यों बदमाश झपटते क्यों हैं?

पढ़ो, तुम्हारी मेहनत का फल सेठ गटकते क्यों हैं?

पढ़ो, लिखा है दीवारों पर मेहनतकश का नारा
पढ़ो, पोस्टर क्या कहता है, वो भी दोस्त तुम्हारा
पढ़ो, अगर अंधे विश्वासों से पाना छुटकारा
पढ़ो, क़िताबें कहती हैं – सारा संसार तुम्हारा
पढ़ो, कि हर मेहनतकश को उसका हक़ दिलवाना है
पढ़ो, अगर इस देश को अपने ढंग से चलवाना है

क ख ग घ को पहचानो
अलिफ़ को पढ़ना सीखो,
अ आ इ ई को हथियार
बनाकर लड़ना सीखो

❑ सफ़दर हाशमी

वतन का गीत

हमारे वतन की नयी ज़िंदगी हो
नयी ज़िंदगी इक मुकम्मिल ख़ुशी हो,
नया हो गुलिस्ताँ नयी बुलबुलें हों
मुहब्बत की कोई नयी रागिनी हो,
न हो कोई राजा न हो रंक कोई
सभी हों बराबर सभी आदमी हों,
न ही हथकड़ी कोई फ़सलों को डाले
हमारे दिलों की न सौदागरी हो,
ज़ुबानों पे पाबंदियाँ हों न कोई
निगाहों में अपनी नयी रोशनी हो,
न अश्कों से नम हो किसी का भी दामन
न ही कोई भी क़ायदा हिटलरी हो,

सभी होठ आज़ाद हों मयकदे में
कि गंगो-जमन जैसी दरियादिली हो,
नये फ़ैसले हों नयी कोशिशें हों
नयी मंज़िलों की कोशिश भी नयी हो।

❑ **गोरख पाण्डेय**

समय का पहिया

समय का पहिया चले रे साथी!
समय का पहिया चले।

फ़ौलादी घोड़ों की गति से आग बर्फ में जले रे साथी!
समय का पहिया चले।

रात और दिन पल-पल छिन छिन आगे बढ़ता जाये!
तोड़ पुराना नये सिरे से सब कुछ गढ़ता जाये,
पर्वत-पर्वत धारा फूटे लोहा मोम सा गले रे साथी!
समय का पहिया चले।

धरती डोले, सूरज डोले, डोलें चाँद सितारे,
डोले गढ़ औ' किले दमन के, डोले शासक सारे,
तूफ़ानों के बीच अमर जीवन का अंकुर पले रे साथी!
समय का पहिया चले।

उठा आदमी जब जंगल में अपना सीना ताने,
रफ़्तारों को मुट्ठी में कर पहिया लगा घुमाने,
मेहनत के हाथों से आज़ादी की सड़कें ढलें रे साथी!
समय का पहिया चले।

❑ **गोरख पाण्डेय**

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा कि तुम लड़ो,
तुम लड़ो, तुम लड़ो
तुम लड़ो कि चहचहा उठें हवा के परिन्दे
तुम लड़ो कि आसमान चूम ले ज़मीन को
तुम लड़ो कि ज़िन्दगी महक उठे

और फिर,
प्यार के गीत गा उठें सभी
उड़ चलें असीम आसमान चीरते।

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा कि तुम उठो,
तुम उठो, तुम उठो

तुम उठो-उठो कि उठ पड़ें असंख्य हाथ
चल पड़ो कि चल पड़ें असंख्य पैर साथ
मुस्कुरा उठे क्षितिज पे भोर की किरन

और फिर,
प्यार के गीत गा उठें सभी
उड़ चलें असीम आसमान चीरते।

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा कि तुम बहो,
तुम बहो, तुम बहो

रुधिर प्रवाह की तरह बहो कि लालिमा
मिटा सके कलंक की, सितम की कालिमा
बहो कि खुशी कैद कभी की न जा सके

और फिर,
प्यार के गीत गा उठें सभी
उड़ चलें असीम आसमान चीरते।

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा कि तुम जलो,
तुम जलो, तुम जलो

तुम जलो कि रोशनी के पंख फड़फड़ा उठें
कुचल दिये गए दिलों के तार झनझना उठें
सुषुप्त आत्मा जगे, गरज उठे

और फिर,
प्यार के गीत गा उठें सभी
उड़ चले असीम आसमान चीरते।

ज़िन्दगी ने एक दिन कहा कि तुम रचो,
तुम रचो, तुम रचो

तुम रचो हवा, पहाड़, रोशनी नयी
ज़िन्दगी नयी, महान आत्मा नयी
सांस सांस भर उठे अमिट सुगन्ध से

और फिर,
प्यार के गीत गा उठें सभी
उड़ चलें असीम आसमान चीरते।

❑ शशि प्रकाश

शहीदों के लिये

ज़िन्दगी लड़ती रहेगी-गाती रहेगी
नदियाँ बहती रहेंगी

कारवाँ चलता रहेगा, चलता रहेगा, बढ़ता रहेगा
खो गये तुम हवा बनकर वतन की हर साँस में
बिक चुकी इन वादियों में गंध बनकर घुल गये
भूख से लड़ते हुए बच्चों की घायल आस में
कर्ज में डूबी हुई फसलों की रंगत बन गये

ख्वाबों के साथ तेरे चलता रहेगा...

हो गये क़ुर्बान जिस मिट्टी की खातिर साथियो
सो रहो अब आज उस ममतामयी की गोद में
मुक्ति के दिन तक फ़िज़ां में खो चुकेंगे नाम तेरे
देश के हर नाम में ज़िन्दा रहोगे साथियो

यादों के साथ तेरे चलता रहेगा...

जब कभी भी लौट कर इन राहों से गुजरेंगे हम
जीत के सब गीत कई-कई बार हम फिर गायेंगे
खोज कैसे पायेंगे मिट्टी तुम्हारी साथियो
ज़र्रे-ज़र्रे को तुम्हारी ही समाधि पायेंगे

लेकर ये अरमाँ दिल में चलता रहेगा...

❑ **शशि प्रकाश**

इरादे कर बुलन्द

इरादे कर बुलन्द अब रहना शुरू करती तो अच्छा था।
तू सहना छोड़कर कहना शुरू करती तो अच्छा था।

सदा औरों को खुश रखना बहुत ही खूब है लेकिन
खुशी थोड़ी तू अपने को भी दे पाती तो अच्छा था।

दुखों को मान क़िस्मत हार कर रहने से क्या होगा
तू आँसू पोंछ कर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था।

ये पीला रंग, लब सूखे सदा चेहरे पे मायूसी
तू अपनी इक नई सूरत बना लेती तो अच्छा था।

तेरी आँखों में आँसू हैं तेरे सीने में हैं शोले
तू इन शोलों में अपने ग़म जला लेती तो अच्छा था।
है सर पर बोझ जुल्मों का तेरी आँखें सदा नीची

कभी तो आँखें उठा तेवर दिखा देती तो अच्छा था।
तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन
तू इस आँचल का इक परचम बना लेती तो अच्छा था।*

(*मशहूर शायर मजाज़ की ग़ज़ल की पंक्ति)

❑ कमला भसीन

ग़ज़ल

आने वाले दिन अपने हैं ये उनको मंजूर नहीं।
रच डालें इतिहास नया हम ये उनको मंजूर नहीं।
उनके आंगन रहे दिवाली हम चाहत भी गुल कर लें
सबके घर हो जायँ चरागाँ ये उनको मंजूर नहीं।
हर दिल तक बाज़ार बिछाने को आये हैं सौदागर
हम उनके सपने ठुकरायें ये उनको मंजूर नहीं।
नई सुबह को लाते-लाते कितनी सदियाँ पिघल गयीं।
फिर भी सख़्त इरादे कायम ये उनको मंजूर नहीं।

❑ करुणाकर

दिलों में घाव ले के भी चले चलो

चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो
चलो लहूलुहान पांव ले के भी चले चलो
चलो कि आज साथ-साथ चलने की ज़रूरतें
चलो कि ख़त्म हो न जाएं ज़िंदगी की हसरतें
ज़मीन, ख़्वाब, ज़िंदगी, यक़ीन सबको बांटकर
वो चाहते हैं बेबसी में आदमी झुकाए सर
वो चाहते हैं ज़िंदगी हो रोशनी से बेख़बर
वो एक-एक करके अब जला रहे हैं हर शहर

जले हुए घरों के ख़्वाब ले के भी चले चलो
चले चलो...

वो चाहते हैं बांटना दिलों के सारे वलवले
वो चाहते हैं बांटना ये ज़िंदगी के क़ाफ़िले
वो चाहते हैं ख़त्म हों उम्मीद के ये सिलसिले
वो चाहते हैं गिर सकें न लूट के ये सब क़िले
सवाल ही हैं अब जवाब ले के भी चले चलो
चले चलो....

वो चाहते हैं जातियों की बोलियों की फूट हो
वो चाहते हैं धर्म को तबाहियों की छूट हो
वो चाहते हैं ज़िंदगी ये हो फ़रेब, झूठ हो
वो चाहते हैं जिस तरह भी हो मगर ये लूट हो
सिरों पे जो बची है छांव ले के भी चले चलो
चले चलो दिलों में घाव ले के भी चले चलो

❑ **ब्रजमोहन**

हड़ताल का गीत

जब तक मालिक की नस-नस को हिला न दे भूचाल
जारी है हड़ताल हमारी जारी है हड़ताल
ना टूटे हड़ताल हमारी ना टूटे हड़ताल

हम इतने सारों को मिल ये गिद्ध अकेला खाता
और हमारे हिस्से का भी अपने घर ले जाता
हक माँगें हम अपना तो ये गुण्डों को बुलवाता
हम सबका शोषण करने को चले ये सौ-सौ चाल
जारी है...

सावधान ऐसे लोगों से जो बिचौलिया होते
और हमारे बीच सदा जो बीज फूट के बोते
और कि जिनके दम पर अफसर मालिक चैन से सोते
देखेंगे उनको भी जो हैं सरकारी दल्लाल
जारी है...

सही-सही माँगों को लेकर जब हम सामने आए
इसके अपने सगे सिपाही बन्दूकें ले आए
जाने अपने कितने साथी इसने हैं मरवाए
लेकिन सुन लो अब हम सारे जलकर बने मशाल
जारी है..

❑ **ब्रजमोहन**

बता मोरे रामा बता मोरे अल्ला

बता मोरे रामा, बता मोरे अल्ला
कहाँ गया घासलेट, कहाँ गया गल्ला?

बुझा पड़ा चूल्हा, खाली है कनस्तर
मुलम्मा नहीं है, उखड़ा पलस्तर

पूछ रहा आदमी, मचा रहा हल्ला
कहाँ गया घासलेट, कहाँ गया गल्ला?

मंहगाई भारती, बुरी मौत मारती
पेट की अगन पर तेज़ाब झारती

सुनता नहीं कोई, देता है टल्ला
कहाँ गया घासलेट, कहाँ गया गल्ला?

नेता बने लाट हैं, साहबों के ठाट हैं
पैसे वाला मीर है, जनता सपाट है

ढूंढ़ कोई रास्ता, बैठा क्यों निठल्ला
कहाँ गया घासलेट, कहाँ गया गल्ला?

कोई नहीं कसता, पिछवाड़े रसता
धीरे-धीरे उससे, माल खिसकता

जूड़ा हुआ ऊपर, नीचे का पल्ला
कहाँ गया घासलेट, कहाँ गया गल्ला?

❑ जयकिरण

आ गये यहाँ जवाँ कदम

आ गये यहाँ जवाँ क़दम, ज़िन्दगी को ढूंढ़ते हुए
गीत गा रहे हैं आज हम, रागिनी को ढूंढ़ते हुए।

अब दिलों में ये उमंग है, ये जहाँ नया बसायेंगे
ज़िन्दगी का तौर आज से, दोस्तों को हम सिखायेंगे
फूल हम नये खिलायेंगे, ताज़गी को ढूंढ़ते हुए।

कोढ़ की तरह दहेज है, आज देश के समाज में
है तबाह आज आदमी, लूट पर टिके समाज में
हम समाज भी बनायेंगे, आदमी को ढूंढ़ते हुए।

फिर न जल सके कोई दुल्हन, जोर-ज़ुल्म का न हो निशां
मुस्करा उठे धरा-गगन, हम रचेंगे ऐसी दास्तां
यूँ सजायेंगे वतन को हम, हर ख़ुशी को ढूंढ़ते हुए
गीत गा रहे हैं आज हम....

❑ भुवनेश्वर

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें
ज़िंदगी आंसुओं में नहायी न हो
शाम सहमी न हो, रात हो न डरी
भोर की आंख फिर डबडबायी न हो।
सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे
रोशनी रोशनाई में डूबी न हो
यूँ न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो
आसमाँ में टंगी हों न ख़ुशहालियाँ
क़ैद महलों में सबकी कमाई न हो।
इसलिए राह ...

कोई अपनी ख़ुशी के लिए ग़ैर की
रोटियाँ छीन ले हम नहीं चाहते
छींटकर थोड़ा चारा कोई उम्र की
हर ख़ुशी बीन ले हम नहीं चाहते
हो किसी के लिए मखमली बिस्तरा
और किसी के लिए एक चटाई न हो।
इसलिए राह...

अब तमन्नायें फिर न करें खुदकुशी
ख़्वाब पर ख़ौफ की चौकसी न रहे
श्रम के पावों में हो ना पड़ी बेड़ियाँ
शक्ति की पीठ अब ज़्यादती ना सहे
दम ना तोड़े कहीं भूख से बचपना
रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो।
इसलिए राह...

❑ वशिष्ठ अनूप

यह ताना-बाना बदलेगा

गंगा की कसम, जमना की कसम, यह ताना-बाना बदलेगा
तू ख़ुद तो बदल, तू ख़ुद तो बदल, बदलेगा ज़माना बदलेगा!
रावी की रवानी बदलेगी, सतलज का मुहाना बदलेगा
गर शौक में तेरे जोश रहा, तस्बीह का दाना बदलेगा!

यह मुर्दा नुमाइश भूखों की, यह उजड़े चमन बेकारों के
जूठन पे सड़क की जीते हुए शहजादे सुर्ख बहारों के,
यह होली खून पसीनों की, नीलामी हुस्न-हसीनों की
बेजार न हो, बेजार न हो, यह सारा फसाना बदलेगा!
गंगा की कसम, जमना की कसम, यह ताना-बाना बदलेगा!
ऊँचे हैं इतने महल कि हर इंसान का जीना मुश्किल है
मन्दिर-मस्जिद की बस्ती में ईमान का जीना मुश्किल है,
रफ्तार ज़रा कुछ और बढ़ा, आवाज़ ज़रा कुछ और बढ़ा
फिर शीशा नहीं, साकी ही नहीं, सारा मयखाना बदलेगा!
गंगा की कसम, ज़मना की कसम, यह ताना-बाना बदलेगा

सूरज की मशालें थामे हुए, जिस दम कि जवानी चलती है
पूरब से लगातार पश्चिम तक सबकी तकदीर बदलती है,
तूफान को आँख दिखाने दो, बिजली को तड़फ कर आने दो
जीने का तरीका बदलेगा, मरने का बहाना बदलेगा!

गंगा की कसम, जमना की कसम, यह ताना-बाना बदलेगा
तू ख़ुद तो बदल, तू ख़ुद तो बदल, बदलेगा ज़माना बदलेगा!
रावी की रवानी बदलेगी, सतलज का मुहाना बदलेगा
गर शौक में तेरे जोश रहा, तस्बीह का दाना बदलेगा!

❑ नीरज

बोल मजूरे हल्ला बोल

हल्ला बोल भई हल्ला बोल भई हल्ला बोल भई हल्ला बोल
बोल मजूरे हल्ला बोल, बोल मजूरे हल्ला बोल
हल्ला बोल...

कांप उठी सरमायेदारी खुलके रहेगी इसकी पोल
बोल मजूरे हल्ला बोल...

ख़ून को अपने बना पसीना तूने बाग लगाया है
कुएं खोदे नहर निकाली ऊँचा महल उठाया है
चट्टानों में फूल खिलाए शहर बसाए जंगल में
अपने चौड़े कन्धों पर दुनिया को यहां तक लाया है
बांकी फौज कमेरों की है, तू है नहीं भेड़ों की गोल
बोल मजूरे हल्ला बोल...

गोदामों में माल भरा है नोट भरे हैं बोरों में
बेहोशों को होश नहीं है नशा चढ़ा है जोरों में
इसका दामन उसने फाड़ा उसका गिरेबां इसके हाथ
कफनखसोटों का झगड़ा है होड़ मची है चोरों में
ऐसे में आवाज़ उठा दे, ला मेरी मेहनत का मोल
बोल मजूरे हल्ला बोल...

सिहर उठेगी लहर नदी की सुलग उठेगी फुलवारी
कांप उठेगी पत्ती- पत्ती चटखेगी डारी-डारी
सरमायेदारों का पल में नशा हिरन हो जाएगा
आग लगेगी नन्दन वन में दहक उठेगी हर क्यारी
सुन-सुन कर तेरे नारों को धरती होगी डावांडोल
बोल मजूरे हल्ला बोल
हल्ला बोल भई हल्ला बोल, बोल मजूरे हल्ला बोलं

❑ जनम

हम जंगे-अवामी से कोहराम मचा देंगे

हर दिल में बगावत के शोलों को जला देंगे
हम जंगे अवामी से कोहराम मचा देंगे
कोहराम मचा देंगे, कोहराम मचा देंगे।

हो जाएगी ये दुनिया फिर तेरे नसीबों की
मजदूर किसानों की भूखों की गरीबों की
रौंदे हुए ज़र्रों को ख़ुर्शीद बना देंगे
ख़ुर्शीद बना देंगे, ख़ुर्शीद बना देंगे।

मज़लूम जो उठ बैठे हर जुल्म पे भारी है
ये खेत हमारे हैं मिलें भी हमारी हैं
हर चीज हमारी है हाकिम को बता देंगे
हाकिम को बता देंगे, हाकिम को बता देंगे।

क़िस्मत के खिलौनों से बहलाया गया हमको
धोखों से फ़रेबों से भरमाया गया हमको
ये झूठ का सिंहासन ठोकर से गिरा देंगे
ठोकर से गिरा देंगे, ठोकर से गिरा देंगे।

कुछ सोच कर ही हमने तलवार निकाली है
हालात से तंग आकर बन्दूक संभाली है
अब ख़ूने-सितमगर से धरती को सजा देंगे।
धरती को सजा देंगे, धरती को सजा देंगे।

दिल्ली के ख़ुदाबन्दो
दिल्ली के ख़ुदाबन्दो
दिल्ली के ख़ुदाबन्दो ऐलान हमारा है
ऐ क़ातिल बदकारो फरमान हमारा है
तुम दुश्मने-इंसाँ हो, हम तुख़्म उड़ा देंगे।
हम तुख़्म उड़ा देंगे, हम तुख़्त उड़ा देंगे।
हम जंगे अवामी...

❑ **जगमोहन जोशी**

ज़िंदाबाद इन्क़लाब

नफस-नफस, कदम-कदम, बस एक फिक्र दम-ब-दम
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंक़लाब चाहिए!
इंक़लाब-ज़िंदाबाद! ज़िंदाबाद-इंक़लाब!

जहां अवाम के खिलाफ़ साज़िशें हों शान से
जहां पे बेगुनाह हाथ धो रहे हों जान से
जहां पे लफ़्जे-अमन एक ख़ौफनाक राज़ हो
जहां कबूतरों का सरपरस्त एक बाज हो
वहां न चुप रहेंगे हम, कहेंगे हाँ, कहेंगे हम!
हमारा हक़, हमारा हक़, हमें जनाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंक़लाब चाहिए!
इंक़लाब-ज़िंदाबाद, ज़िंदाबाद-इंक़लाब!

यक़ीन आंख मूंद कर किया था जिनको जान कर
वही हमारी राह में खड़े हैं सीना तान कर
उन्हीं की सरहदों में क़ैद हैं हमारी बोलियाँ
वही हमारे थाल में परस रहे हैं गोलियाँ
जो इनका भेद खोल दे! हर एक बात बोल दे!
हमारे हाथ में वही खुली क़िताब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल में हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंक़लाब चाहिए!
इंक़लाब-ज़िंदाबाद! ज़िंदाबाद-इंक़लाब!

वतन के नाम पर खुशी से जो हुए हैं बे-वतन
उन्हीं की आह बे-असर, उन्हीं की लाश बे-कफन
लहू-पसीना बेचकर जो पेट तक न भर सकें
करें तो क्या करें भला न जी सकें न मर सकें
सियाह ज़िन्दगी के नाम, उनकी हर सुबह-ओ-शाम

उनके आसमाँ को सुर्ख आफ़ताब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंक़लाब चाहिए!
इंक़लाब-ज़िंदाबाद! ज़िंदाबाद-इंक़लाब!

होशियार! कह रहा लहू के रंग का निशान
ऐ किसान होशियार! होशियार नौजवान
होशियार! दुश्मनों की दाल अब गले नहीं
सफ़ेदपोश रहजनों की चाल अब चले नहीं
जो इनका सर मरोड़ दे, ग़रूर इनका तोड़ दे
वह सरफ़रोश आरजू वही शबाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंक़लाब चाहिए!
इंक़लाब-ज़िंदाबाद! ज़िंदाबाद-इंक़लाब!

तसल्लियों के इतने साल बाद अपने हाल पर
निगाह डाल, सोच और सोच कर सवाल कर
किधर गये वो वायदे? सुखों के ख़्वाब क्या हुए?
तुझे था जिनका इन्तज़ार वो जवाब क्या हुए?
तू इनकी झूठी बात पर, न और एतबार कर
कि तुझको सांस-सांस का सही हिसाब चाहिए!
घिरे हैं हम सवाल से हमें जवाब चाहिए!
जवाब दर सवाल है कि इंक़लाब चाहिए!
इंक़लाब-ज़िंदाबाद! ज़िंदाबाद-इंक़लाब!

❑ शलभ श्रीराम सिंह

गाँव-गाँव से उठो...

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो

हाथ में जिसके क़लम है क़लम लेके उठो
बाजा बजाने वालो तुम बाजा लेके उठो

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो

हाथ में जिसके औज़ार है औज़ार लेके उठो
पास में जिसके कुछ भी नहीं आवाज़ लेके उठो

गाँव-गाँव से उठो बस्ती-बस्ती से उठो
इस देश की सूरत बदलने के लिए उठो

(एक नेपाली गीत का हिन्दी रूपान्तरण)

शमा जलाइये

अब आगे बढ़कर आप इक शम्मा जलाइये।
इस अहले सियासत का अन्धेरा मिटाइये।

अब छोड़िये आकाश में नारे उछालना
आकर हमारे कन्धे से कन्धा मिलाइये।

जुल्मों सितम की आग लगी है यहाँ-वहाँ
पानी से नहीं आग से इसको बुझाइये।

हैवानियत की आग ये फैला रहे नेता
शरीफों से गुज़ारिश है कि मैदां में आइये।

क्यों कर रहे हैं आन्धियाँ रुकने का इन्तज़ार
ये जंग है, इस जंग में ताकत लगाइये।

बेरुजगारी बड़ी बेमारी

बेरुजगारी बड़ी बेमारी फैली बीच हमारे
पढ़े लिखे भी भारत के मा हाण्डें मारे-मारे

ग्यारा की औकात कड़ै जिब बी.ए. एम.ए. रोवें सै
काट-काट दफ्तर के चक्कर आके भूखे सोवें सै

खोया सै न्यूंए पढ़ के पइसा बात जाणगे सारे
पढ़े लिखे भी ....

मन्त्रियों ने वजह बताई जनसंख्या बेकारी की
असली जड़ सरमाएदारी पाई उस बेमारी की

इस ए कारण हुई महँगाई दीखे दिन में तारे
पढ़े लिखे भी ....

भूखे प्यासे मात पिता रह म्हारी फीस पुगावें सै
सोचें बेटा बनेगा अफसर आस घणी वे लावें सै

जित जाँ पहले माँगें रिश्वत मीट और बोतल न्यारे
पढ़े लिखे भी ....

हल हो ज्या यो बेकारी जो मिलके हम संघर्ष करें
तोड़ के ढाँचा गला सड़ा यो अच्छे की जो नींव धरें

कह किसान हो सुखी जो मिट जाँ ये शोषक हत्यारे
पढ़े लिखे भी ....

कचहरी के मारे का गीत

ऐसे धरे धूप ने धौल
देह सब कारी है गयी है,
कारी है गयी है, देह सब कारी है गयी है!

जब चाहे तब पाँय भगाये
कोट कचहरी ने,
जब पहुँचे तारीख डारी दई
गूँगी बहरी ने,
इतनी करी परेड, देह सरकारी है गई है!
इत वकील, उत थानेदारी
लोहू पीवत हैं
दोनों तरफ गाँठ के ग्राहक
बड़ी मुसीबत है,
इनके मारे भूख-प्यास, पटवारी है गई है!
मँहगाई की मार, गवाही
वारेन के नखरे,
पेट काटि के झेले तबहूँ, पूरे नाहिं परे
सुन लौ सारौ गाम, गरीबी गारी है गई है!
ऐसे धरे धूप ने धौल
देह सब कारी है गयी है।

('अरे माखन की चोरी छोड़, कन्हैया! मैं समझाऊँ तोय' रसिया की एक विशेष धुन पर आधारित **रमेश रंजक** का लोकगीत)

जैंतां एक दिन तो आलो

ततुक नी लगा उदेख
घुनन मुनई नि टेक
जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में
चाहे हम नी ल्यै सकां
चाहे तुम नी ल्यै सकां
मगर क्वे तो ल्यालो ऊ दिन यो दुनी में
जैदिन कठुलि रात ब्यालि

कौ कड़ाहा पौ फटाली
जैंतां एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

जैदिन नान-ठुलो नि रौलो
जै दिन त्योर-म्योर नि होलो
जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

जै दिन चोर नि फलाल
कैक जोर नि चलौल
जैंता एक दिन तो आलो ऊ दिन यो दुनी में

चाहे बोज्यू नि ल्यै सको
चाहे दाज्यू नि लै सको
मगर नान-तिन तो लालो ऊ दिन यो दुनी में

❑ 'गिरदा'

बड़ी-बड़ी कोठिया सजाए पूँजीपतिया

बड़ी-बड़ी कोठिया सजाए पूंजीपतिया
कि दुखिया के रोटिया चोराए-चोराए
अपने महलिया में करे उजियरवा
कि बिजुरी के रडवा जराए-जराए

कत्तो बने भिटवा कतहुं बने गड़ही
कत्तो बने महल कतहुं बने मड़ई
माटया के दियना तूहीं त बुझवाया
कि सोनवा के बेनवा डोलाए-डोलाए
बड़ी-बड़ी कोठिया....

मिलिया में खून जरे खेत में पसीनवां
तबहुं न मिलिहैं पेट भर दनवां
अपनी गोदमिया तूहीं त भरवाया

कि बड़े-बड़ बोरवा सियाए-सियाए
बड़ी-बड़ी कोठिया....

राम अउर रहीम के ताखे पे धइके लाला
खोई के ईमनवा बटोरे धन काला
देसवा कऽ हमरे तू लूट के खाया
कई गुना दमवा बढ़ाए-बढ़ाए
बड़ी-बड़ी कोठिया....

जेतऽ करे काम छोट कहवावे
ऊ बा बड़ मनई जे जतन बतावे
दस के ससनवा नब्बे पे करवावे
इहे परिपटिया चलाए-चलाए
बड़ी-बड़ी कोठिया....

जुड़ होई छतिया तनिक दऊ बरसा
अब त महलिया में खुलिहें मदरसा
दुखिया कऽ लरिका पढ़े बदे जइहें
छोट बड़ टोलिया बनाए-बनाए
बड़ी-बड़ी कोठिया....

बिनु काटे भिटवा गड़हिया न पटिहें
अपने खुशी से धन धरती न बटिहें
जनता कऽ तलवा तिजोरिया पे लगिहें
कि महल में बजना बजाए-बजाए
बड़ी-बड़ी कोठिया....

❑ जमुई खां आज़ाद

रउरा सासना के बाटे न जवाब...

रउरा सासनऽ के बाटे ना जवाब भाई जी,
रउरा कुरसी से झरेला गुलाब भाई जी।

रउरा भोंभा लेके सगरो अवाज करीला,
हमरा मुंहवा में लागल बाटे जाब भाई जी।

रउरे बुढ़िया के गलवा में क्रीम लागेला,
हमरी नइकी के जरि गइले भाग भाई जी।

रउरे लरिका त पढ़ेला बिलाइत जाई के,
हमरे लरिका के जुरे ना किताब भाई जी।

हमरे लरिका के रोटिया पर नून नइखे,
रउरा चांपीं रोज मुरगा कबाब भाई जी

रउरे अंगुरी पर पुलिस आऊर थाना नाचे ले,
हमरे मुअले के होखे न हिसाब भाई जी।

पहिले-पहिले जब ओट माँगे अइलें

पहिले-पहिले जब ओट माँगे अइलें तऽ बोले लगलें ना
हो कि बोले लगलें ना
तोहके खेतवा दिअइबों
ओमे फसलि उगइबों
ऊ तऽ बोले लगलें ना

बजड़ा को रोटिया पऽ देई-देई नूनवां
सोचलीं कि अब तऽ बदली कनूनवां
अब जमीदरवा के पनहीं ना सहबों
अब ना अकारथ बहे पाई खूनवा
दूसरे चुनउवा में जब उपरइलें तऽ बोले लगलें ना
हो कि बोले लगलें ना
तोहके कुइंया खनइबों
सब पियसिया मिटइबों
ऊ तऽ बोले लगलें ना

ईहवां से उड़ि-उड़ि ऊहां जब गइलें
सोचलीं जमीनियां के बतिया भुलइलें
हमनी के धीरे से जो मनवा परवलीं
जोर से कनूनिया-कनूनिया चिलइलें
तीसरे चुनउवा में चेहरा दिखइलें तऽ बोले लगलें ना
हो कि बोले लगलें ना
तोहके महल उठइबों
ओमे बिजुरी लगइबों
ऊ तऽ बोले लगलें ना

चमकल बिजुरी तऽ गोसियाँ दुअरिया
हमरी झोपड़िया में घहरे अन्हरिया
सोचलीं कि अब तक जेके-जेके चुनलीं
हमके बनावें सब काठ के पुतरिया
अबकी टपकिहें त कहबों कि देखऽ तू बहुत कइलऽ ना
हो बहुत कइलऽ ना
तोहके अब ना थकइबों
आपन हथवा उठइबों
हम तऽ इहे कहबों ना

हथवा में हमरे फसलिया भरलि बा
हथवा में हमरे लहरिया भरलि बा
एही हथवा से देश दुनिया में सगरी
लूट कऽ किलन पर बिजुरिया गिरलबा
अब हम इहवों के किलवा ढहइबों त एही हाथे ना
हो कि एही हाथे ना
तोहके मटिया मिलइबों
आपन रजवा बनइबों
हो कि एही हाथे ना

❑ **गोरख पाण्डे**

अब ना सहब हम जुलुमियाँ तोहार

अब ना सहब हम जुलुमियाँ तोहार भले भेजऽ जेहलिया हो

सगरे छिंटाइलबा हमरे कमीनी
हमहीं उगाईं हमहीं अब कीनी
हम भइनी गंगा के ढ़हल कगार
करीं तोहरी टहलिया हो

तोहरे लरिकवा के मोटर आउ गाड़ी
हमरे लरिकवा के खांची कुदारी
उड़ल हवा में झोपड़िया हमार
हंसे तोहरी महलिया हो

पुलिस मिलिटरी के गांवे बोलाके
दागेल ऽ गोली तू हमके पोल्हा के
कबले चली इ बनुकिया तोहार
दहके लागी नलिया हो

देख सिवनवा के पेड़ सुगबुगाइल
पूरब में सूरज के लाली छिंटाइल
गंगा जस उमड़ल बा जनता के धार
ढ़हि जाइ महलिया हो

कहाँ गऽ बिहान पिया

सारी जिन्दगी गुलामी में सिरान पिया
कहाँ गऽ बिहान पिया ना।

जबसे मिली आजादी, ढेर बढ़ी बरबादी।
दूनउ जून नाहीं खाय के ठेकान पिया।

कहाँ गऽ बिहान पिया ना।।

भुखिया-दुखिया परेशान, रोवइँ छात्र-नौजवान।
माटी मोल बिकइँ मजदूर किसान पिया-
कहाँ गऽ बिहान पिया ना।।

राजा, राजा कहलावँइ, सेठ बाँसुरी बजावइँ।
हमार जीते भई जिनगी मसान पिया-
कहाँ गऽ बिहान पिया ना।।

गाँधी जी के बरदान, चेला चाभइँ पकवान।
ओनहीं तिरंगा उड़ावइँ आसमान पिया-
कहाँ गऽ बिहान पिया ना।।

नेता बइठें राजधानी, इहाँ पियइ के न पानी।
रोज उड़इँ चन्द्रलोक के उड़ान पिया-
कहाँ गऽ बिहान पिया ना।।

सबइ नेता बोरइँ नावऽ, फिर से आई गऽ चुनाव।
वोट देब कौने पार्टी के निसान पिया-
कहाँ गऽ बिहान पिया ना।।

आपन संगठन बनावऽ, घर-गाँव के जगावऽ।
आपन झण्डा फहरावऽ गाँव-गाँव पिया-
तबे होइ बिहान पिया ना।।

❑ नरेन्द्र

गुलमिया अब हम नाहीं बजइबों

गुलमिया अब हम नाहीं बजइबों, अजदिया हमरा के भावेले।

झीनी-झीनी बीनीं चदरिया, लहरेले तोहरे कान्हे
जब हम तन के परदा माँगीं, आवे सिपहिया बान्हे
सिपहिया से अब नाहीं बन्हइबों, चदरिया हमरा के भावेले।

कंकड़ चुनि-चुनि महल बनवलीं, हम भइलीं पदरेसी
तोहरे कनुनिया मारल गइलीं, कहवों भइल ना पेसी
कनुनिया अइसन हम नाहीं मनबों, महलिया हमरा के भावेले।

दिनवा खदनिया से सोना निकललीं, रतिया लगवलीं अँगूठा
सगरी जिनगिया करजे में डूबलि, कइलऽ हिसबवा झूठा जिनगिया अब
हम नाहीं डुबइबो, अछरिया हमरा के भावेले

हमरे जँगरवा से धरती फुलाले, फुलवा में खुशबू भरेले
हमके बनुकिया से कइल बेदखली, तोहरे मलिकई चलेले
धरतिया अब हम नाहीं गँवइबों, बनुकिया हमरा के भावेले।

❑ **गोरख पाण्डेय**

कोइला

छक-छक-छक छक रेलिया जो चलली
त कहवां से आइल रे कोइलवा!

धरती के छतिया बजर के अन्हरिया
जेकरा के तोड़ि अंग अंग कइलीं करिया
जब हम जगमग जोतिया जरवलीं
त कहवां से आइल रे कोइलवा!

केहू के बा पूरा पूरा केहू के बा टुकड़ा
केहू ललचावे, देखि केहू रोवे दुखड़ा
सोन्ह-सोन्ह रोटिया ई तउआ पर पकली
त कहवां से आइल रे कोइलवा!

चकमक सीसा अस चमके महलिया
मोहनी महलिया के ईटा के देवलिया

आगि जब ईटवा पर लाल रंग चढ़वली
त कहवां से आइल रे कोइलवा!

कहीं अवजार बने कहीं हथियरवा
दुनिया के बदले के चले जेसे करवा
धधकत भठिया में लोहवा गलवलीं
त कहवां से आइल रे कोइलवा!

❑ गोरख पाण्डेय

होइहें गरीबे गरीब के सहाई

होइहें गरीबे गरीब के सहाई।
राजा चाहें खून खराबी, रानी झांसापट्टी
चोरवा रात अन्हरिया जेसे सेन्हिया लगाई।

नेता चाहें बड़हन कुरसी हाकिम सुन्दर बंगला
जमींदार बेगारी जेसे बइठल मजा उड़ाई।

पूंजीपति के एके चिन्ता कइसे बढ़े मुनाफा
ओकरे लेखे अदिमी बाटे रुपया अउरी पाई।

जेकरे हाथे पड़लि हथकड़ि ऊहे तोड़ल चाही
पांव बेवाई न जेकरे ऊ का जानी पीर पराई।

लूटे अउर लुटाये वाला में का भाईचारा
एक म्यान के भीतर कइसे दू तलवार समाई।

जोते-बोवे वाला के होई माटी से ममता
जे माटी के चाहे ओकर फल पर हक हो जाई।

भूखा नंगा रोटी कपड़ा पर बोली झट धावा
जेकरे हाथ चले मिल ऊहे मिल के लड़ी लड़ाई।

❑ गोरख पाण्डेय

जागरण

बीतऽता अन्हरिया के जमनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ!

गंउवा जगा दऽ आ सहरवा जगा दऽ
छतिया में भरल अंगरवा जगा दऽ
जैसे जरे पाप के रवनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ।

तनवा जगा द आपन मनवा जगा दऽ
अपने जंगरबा के धनवा जगा दऽ
ठग देखि भागे जगरनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ।

नेहिया के बन्हल परनवा जगा दऽ
अंसुआ में डुबल सपनवा जगा दऽ
मुकती के मिलल बा बयनवा हो संगतिया
सबके जंगा दऽ।

हथवा जगा द हथियरवा जगा दऽ
करम जगा द आ बिचरवा जगा दऽ
रोसनी से रच नया जहनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ।

❑ **गोरख पाण्डेय**

नदिया के पार

नइया लगाव तनी भइया हो मलहवा
जाए के बा नदिया के पार।
उहे बाटे लउकत धुंधर दियरवा
जहां बाटे घरवा हमार।
नदी का किछरवा बसल मोर गइयाँ
जंहवा बितल भइया मोर लइकइयाँ
पेटवा के जरल धइनी कलकतिया
बिपती में केहू नाहीं होखेला संघतिया
पंचवे बरिस पर जात बानी घरवा
धरकत मनवा हमार। नइया लगाव ...

बुढ़वा हो गइनी हम करिके नोकरिया
तबहूं त रहि गइल सुखवा सपनवां
पतिया लिखाई ईया भेजे कलपनवां
फिकिर से तड़फत रहत परनवां
बाड़ी मोर ईयवा बेमार। नइया लगाव ...

हमहूं बेहाल नाहीं छूटत जड़इया
सथवा में बाटे खाली लाई के गंठरिया
घरनी हमार उहां करे मजदूरिया
रोई रोई पेन्हे एगो झिरकुट सड़िया
गिरल बुझात मोर टुटही मरइया
कइसे ई बेड़ा होई पार। नइया लगाव ...

दउरल आई जब नन्हका लइकवा
माँगे लागी जब लाल भगई अउ मीठवा
फाटि जइहें भइया मोर पत्थर करेजवा
अंखिया में लोर नाहीं बचल धीरजवा
चारु ओर भइल अन्हार ना सूझत किछु
नइया पड़ल मझधार । नइया लगाव ...

❑ **बसंत कुमार**

इंटरनेशनल

उठ जाग ओ भूखे बंदी

अब खींचो लाल तलवार

कब तक सहोगे भाई ज़ालिम का अत्याचार

तुम्हारे रक्त से रंजित क्रंदन

अब दसों दिशा लाल रंग

सौ-सौ बरस के बंधन एक साथ करेंगे भंग

ये अंतिम जंग है इसको जीतेंगे हम एक साथ

गाओ इंटरनेशनलऽऽऽ भव स्वतंत्रता का गान।

❑

यूजीन पोतिए

नौजवानों का अन्तरराष्ट्रीय गीत

एक हैं हमारी आज राहें
और एक है हमारा आज गान
चाहे लाख तुफान आये
रहेंगे एक सब जहाँ के नौजवान
हरेक देश और हर जाति
जवानों के ही दम से जगमगाती
गा रहे हैं नौजवाँ बनाओ इक नया जहाँ
कि जिसमें हो न जुल्म का निशाँ
गाते गीत अमन के बढ़े चलो-
बढ़े चलो-बढ़े चलो
अपनी आन के लिए लड़े चलो-
लड़े चलो-लड़े चलो
हम हैं जवान,
हम चलें तो साथ चलते हैं जमीनो-आसमान
एक है हमारी आज आशा
और एक है हमारा अरमान
कोई देश हो या कोई भाषा
पर समझते हैं दिलों की हम जुबान।
हम फर्क ऊँच-नीच का न जानें
न भेद जात-पाँत का ही मानें
हम सभी जवान हैं, सभी तो इनसान हैं
यही हमारा नाता है महान
गाते गीत अमन के बढ़े चलो-
बढ़े चलो-बढ़े चलो
अपनी आन के लिए लड़े चलो-
लड़े चलो-लड़े चलो
हम हैं जवान, हम चलें तो
साथ चलते हैं जमीनो-आसमान

ISBN : 81-87772-17-4
मूल्य : 25 रुपये